विनोद कुमार शुक्ल

बाजार से खरीदी गई है

बाजार से खरीदी गई है यह टँगी हुई रंगीन तस्वीर
सुंदर गोल-मटोल बच्चों की –
कि अपने घर के बच्चे इतने सुंदर नहीं होते,
वैसे जूते-कपड़े
और इतने स्वस्थ, गोल-मटोल भी नहीं होते ।

बहुत बिकती हैं
इसी तरह बच्चों की तस्वीरें
इसे खरीद लेने का मन
पिता के मन जैसा
किसी का भी हो जाता है
घर-घर अब तो आम हुआ है ।

दरअसल अपने-अपने बच्चों की
गुमसुम सब तरफ चिंता है ।

विनोद कुमार शुक्ल, अतिरिक्त नहीं
दिल्ली, वाणी प्रकाशन 2000:66